रक्षा-बन्धन

रक्षा-बन्धन का त्योहार न जाने कितने दूर वालों को नजदीक और नजदीक वालों को और ही नजदीक लाकर एक मीठी गुदगुदी, विश्वास और अपनेपन की भावना जगाकर नवीनता भर जाता है। किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होने के कारण इसके पीछे एक विशाल भावना छिपी हुई है, वह है भाई-बहन के सत्य, अविनाशी पावन त्याग भरे रिश्ते की भावना।

स्वभाव से स्वतन्त्रता प्रेमी होने के नाते मनुष्य हर बन्धन से छुटना चाहता है। परन्तु यह न्यारा-प्यारा बन्धन है, जिसे उत्सव समझ कर सभी खुशी से बन्धवाते हैं। बन्धन भी दो प्रकार के होते हैं। एक है सांसारिक अर्थात् कर्मो का बन्धन, जो मानव को दुःख देता है और दूसरा है अविनाशी या धार्मिक बन्धन, जो मानव के लिए सुख लेकर आता है। रक्षा-बन्धन भी अपने शुद्ध रूप में एक आध्यात्मिक रस्म है, लेकिन मात्र सांसारिक रूपसे मनाने के कारण इस तयोहार के महत्व कम हो गई है।

मुख्य रूप से इस त्योहार के पीछे यही राज बताते हैं कि इस दिन भाई बहन को रक्षा का वचन देता है और बहन भाई को राखी बान्धती है और मुख मीठा कराती है। परन्तु देखा जाता है कि छोटा भाई शारीरिक दृष्टिकोण से भी बहन की रक्षा करने में असमर्थ हो सकता है। कई परिस्थितियों में भाई दूर रहता हैं और समय पर अपनी बहन की रक्षा करने में असमर्थ होता है। फिर यह भी बात आती है कि क्या रक्षा की जरूरत केवल बहन को ही है, भाई को नहीं होती?

इतिहास तो ऐसी नारियों की गाथा से गौरवान्वित है जिनसे पुरूषों ने भी रक्षा की कामना की। जैसे झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और रानी दुर्गावती। फिर रक्षा का उत्तरदायित्व बचपन में पिता पर, जवानी में पति पर, बुढ़ापे में पुत्र पर माना जाता है। तो रक्षा की जिम्मेवारी केवल भाई पर ही क्यों रखी गई? सदियों से इस त्योहार के मनाए जाते रहने पर भी आए दिन बलात्कार, अपहरण जैसी कितनी घिनौनी घटनाएं घटती हैं। तो क्या उन भाइयों को राखी नहीं बांधी जाती हैं?

एक और भी सोचने वाली बात है कि क्या देवकी ने कंस को राखी नहीं बांधी होगी, जब कि आर्य ग्रन्थों के अनुसार वह सनातन धर्म के अनुगामी थे? छत्रपति शिवाजी ने गोहरबानु के साथ जो रिश्ता निभाया वह तो सभी जानते हैं जबकि गोहरबानु ने शिवाजी को कभी भी राखी नहीं बांधी थी, वह तो मुसिलम धर्म को मानने वाली थी। रक्षा-बन्धन कोई स्थूल बन्धन नहीं है। धर्म अर्थात् श्रेष्ठ गुणों की धारणा। जो धर्म की रक्षा करता हैं, धर्म उसकी रक्षा करता है। जो मन-वचन-कर्म से पवित्रता की मर्यादा की रक्षा करता है, पवित्रता उसकी रक्षा करती है।

बहन-भाई के नाते में पवित्रता समाये होने के नाते बहनें यह शुभ कार्य करती हैं। परन्तु सदा काल की पवित्रता देने वाले और सदा काल के लिए सुरक्षा की गाँरन्टी देने वाले एक परमात्मा पिता ही है। वही सर्व समर्थ हैं सृष्टि नाटक के नियन्ता हैं और इसके परिवर्तक हैं। कलियुग के अन्त में कृपानिधि परमपिता परमात्मा स्वयं अवतरित होकर हर मनुष्य आन्मा को श्रेष्ठ दृष्टि, वृत्ति और कृति की राखी बांधते हैं। इस कार्य में वह स्त्री-पुरूष का भेद न रख कर हर आत्मा को विकार ग्रसित देखकर उसे राखी बंधवाने का अधिकारी समझते हैं। जहाँ पवित्रता आ जाती है वहाँ सर्व प्राप्तियां पीछे-पीछे आती हैं।

जिस प्रकार कमल का फूल न्यारा और प्यारा रहने का प्रतीक है, इसी प्रकार रक्षा-बन्धन बुराईयों से रक्षा करने वाले आध्यात्मिक बंधन में बंधने का प्रतीक है। बात याद रखने के लिए पल्ले से गांठ बांन्धने का रिवाज हमारे यहाँ प्रचलित है। इसी प्रकार राखी भी भगवान के साथ उसकी श्रेष्ठ मत पर चलने का वायदा है।

रक्षा-सूत्र बांधने के साथ-साथ इस पर्व की दो रस्में और भी हैं। एक है मस्तक पर तिलक लगाना और दूसरा है मुख मीठा कराना। तिलक वास्तव में आत्म-स्मृति का प्रतीक है, कि हम सभी शरीर रुपी कुटिया की भ्रुकुटी में स्थित चेतन, दिव्य आत्मा हैं। और मुख मीठा कराने के पीछे भाव है कि हम सभी को सदा मीठे वचन बोलें। हमारे बोल-चाल और व्यवहार में कहीं भी कड़वाहट ना हो। अतः रक्षा-बन्धन वह न्यारा-प्यारा बन्धन है जो मनुष्य आत्माओं को सब बन्धनों से मुक्त कर देता है।

-: ओम शान्ति :-